बाल भारती पब्लिक स्कूल, पीतम पुरा, दिल्ली।

साप्ताहिक पाठ योजना

कक्षा – छठी

विषय – हिंदी

सप्ताह – 18/1/21 से 22/1/21 तक कालांश – 02

उपविषय– ए. ए. सी. गतिविधि (ऐसे- ऐसे)

मैं सबसे छोटी होऊँ

अधिगम प्रतिफल-

१. छात्र अपने बचपन के दिनों की शरारती घटनाओं को याद कर सकेंगे ।

२. छात्रों को मनोवैज्ञानिक भावनाओं को जानने का अवसर प्राप्त हो सकेगा।

३. छात्रों के शब्दभंडार में वृद्धि हो सकेगी ।

निर्देशात्मक सहायक सामग्री –

https://www.youtube.com/watch?v=fY4n4CxBjSw&ab_channel=NCERTOFFICIAL

https://youtu.be/wwcRlSuS8Fc

पाठ परिवर्धन –

कालांश -1

ए. ए. सी. गतिविधि (ऐसे- ऐसे) के लिए पाठ को नीचे दिए गए लिंक के माध्यम से समझें ।

https://www.youtube.com/watch?v=uaqat3QaP_Q&ab_channel=SuccessCDsEducation

पाठ का सार –

'ऐसे-ऐसे' एकांकी विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित है। इस पाठ में नाटककार ने एक ऐसे बच्चे के नाटक को दिखाया है जो छुट्टी के दिनों में अपना गृहकार्य नहीं बना पाने पर बिमारी का बहाना करता है ताकि वह स्कूल जाने से बच जाए।

पात्र परिचय

- मोहन - एक विद्यार्थी
- दीनानाथ - एक पड़ोसी
- मोहन की माँ
- मोहन की पिताजी
- मोहन की मास्टरजी
- वैध
- पड़ोसिन
- डॉक्टर

मोहन कमरे में बेड पर लेटा बार बार पेट पकड़ कर कराह रहा है। बगल में बैठी उसकी माँ गरम पानी का बोतल से पेट सेंक रहीं है। वह मोहन के पिता से पूछती हैं कि उसने कुछ ख़राब चीज़ तो नहीं खायी है। पिता तसल्ली देते हुए कहते हैं कि मोहन ने केवल केला और संतरा खाया है। दफ़्तर से ठीक ही आया था, बस अड्डे पर अचानक बोला - पेट में 'ऐसे-ऐसे' हो रहा है।
माँ पिता से पूछती हैं कि डॉक्टर अभी तक क्यों नहीं आया। माँ पिता को बताती हैं कि हींग, चूरन, पिपरमेंट दे चुकीं हैं परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। तभी फ़ोन की घंटी बजती है। पिता फ़ोन रखने के बाद बताते हैं कि डॉक्टर साहब आ रहे हैं।
थोड़ी देर बाद वैध जी आते हैं। वे मोहन की नाड़ी छूकर बताते हैं कि उसके शरीर में वायु बढ़ने के कारण ऐसा हो रहा है। वह बताते हैं कि उसे कब्ज़ है, कुछ पुड़िया खाने के बाद ठीक हो जाएगा। वैध जी के जाने के बाद डॉक्टर साहब आ जाते हैं। वे मोहन की जीभ को देखते हैं और बताते हैं कि उसे बदहजमी है। वह दवाई भेजने की बात करते हुए निकल जाते हैं।
डॉक्टर के जाने के बाद पड़ोसिन आती है। वह मोहन की माँ को नयी-नयी बीमारियों के बारे में बताती है। उसी वक़्त मोहन के मास्टरजी भी आ जाते हैं। वह मोहन का हाल पूछते हैं। मास्टरजी समझ जाते हैं कि मोहन ने गृहकार्य पूरा नहीं किया है इसलिए वह बिमारी का बहाना कर रहा है। मास्टरजी सभी को बताते हैं कि मोहन ने महीने भर मस्ती की जिसके कारण उसका स्कूल का कार्य पूरा नहीं हुआ इसलिए उसने यह बिमारी का बहाना किया। मास्टरजी मोहन को दो दिन का वक़्त देते हैं और कार्य पूरा करने के लिए कहते हैं। माँ यह बात सुनकर दांग रह जाती है। पिताजी के हाथ से दवा की शीशी गिरकर टूट जाती है। सभी लोग हँस पड़ते हैं।

ए. ए .सी . गतिविधि :-
अपनी पाठ्य पुस्तक "वसंत" के पाठ ऐसे -ऐसे को पढ़कर अपने बचपन के दिनों को
याद कीजिए तथा अपने अनुभव को निम्नलिखित शीर्षक के अंतर्गत एक अनुच्छेद के रूप में लिखिए।

शीर्षक : " शरारत पड़ी महँगी "
अथवा
"जब हुई मुझसे बड़ी भारी भूल "

कालांश -2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

क . माँ का आँचल पकड़कर बेटी क्या करना चाहती है ?
ख . बेटी को अपनी माँ से क्या शिकायत है ?
ग . माँ अपनी बेटी के कौन - कौन-से काम करती है ?
घ ." सज्जित कर गात " का क्या अर्थ है ?
ड़. कविता में सबसे छोटे होने की कल्पना क्यों की गई है ?
च .माँ अपनी बेटी को कौन -सी बात नहीं सुनाती ?
छ. बच्चों के बड़े होने पर माँ के व्यवहार में क्या -क्या परिवर्तन आते हैं ?

व्याकरणिक प्रश्न –

निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए पाठ में प्रयुक्त शब्द लिखिए : -
क . भय से मुक्त ----------
ख . लोभ से रहित ----------
ग . धोखा देना ----------
घ .चाँद का उदित होना ----------

क्रियाकलाप –

पत्र : आपका एक सहपाठी बहुत शरारती है, पढ़ाई के समय भी वह शरारतें करता रहता है, किसी के समझाने पर भी नही मानता , उसके बारे में बताते हुए प्रधानाचार्य जी को पत्र लिखिए।

मूल्यांकन -

मौखिक चर्चा , गृह कार्य , साप्ताहिक परीक्षा ।

BBPS,PITAM